सम्पर्क की रात्रिशाला

संगठन

सम्पर्क स्वयं सेवी संस्था की स्थापना 1987 में म.प्र. के भीलांचल झाबुआ जिले के गांव रायपुरिया जो कि पेटलावद विकासखण्ड में स्थित है। शुरूआत में समाज कार्य एवं अनुसंधान केंद्र तिलोनिया की एक शाखा के रूप में कार्य शुरू किया और जल्द ही संस्था ने एक स्वतंत्र पहचान कायम की जिसे 1990 से सम्पर्क स्वयं सेवी संस्था के नाम से जाना जाने लगा। आदिवासी समाज के साथ सहभागिता के आधार पर कार्य करने की वचनबद्धता के चलते संस्था ने चेतनामूलक एवं विकासात्मक कार्यों को हाथ में लेकर स्थानीय युवको को साथ में लेकर कंघे से कंघा मिलाकर कार्य की शुरूआत की। शिक्षा के मामले में क्षेत्र की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। 1991 की जनगणना के अनुसार क्षेत्र की साक्षरता का प्रतिशत 9.4 था जिसमें पुरूष साक्षरता का प्रतिशत 14.5 व महिला साक्षरता का 4.3 प्रतिशत थी। पहले 19 गांवों में से 6 गांवों में सरकारी प्राथमिक शालायें थी इनमें भी लड़कियों की मात्रा बहुत कम थी। साथ ही लोगो का कृषि एवं मजदूरी पर निर्भरता, जागरूकता का अभाव, पलायन की उच्च दर, गांव से सरकारी शालाओं की दूरी, शिक्षको का अभाव, पढ़ाने का अरूचिकर तरीकों के कारण बच्चे शालाओं में जाने प्रेरित नहीं हो सके।

उपरोक्त स्थिति में सुधार के लिए संस्था ने क्षेत्र के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आये व समुदाय का शिक्षा का स्तर बढ़े विशेषकर लड़किया की स्थिति में सुधार हो इस तरह के उद्देश्यो को ध्यान में रखकर 1994 में अनौपचारिक रात्रिशालाओं का संचालन किया। स्थानीय संसाधनों का उपयोग व बालको के अनुभव आधारित शिक्षा पर बल देकर स्थानीय कुछ पढ़े–लिखे युवको को प्रशिक्षित कर शिक्षण कार्य प्रारंभ किया। आज क्षेत्र में 20 रात्रिशालाओं का संचालन संस्था कर रही है जिसमें 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों की संख्या 670 है जिसमें लड़के 365 व लड़कियां 305 है।

सम्पर्क कहां है, भौगोलिक क्षेत्र एवं समुदाय

सम्पर्क मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के रायपुरिया व पेटलावद गांव के मध्य स्थित है। झाबुआ जिला राजस्थान व गुजरात राज्य के सीमावर्ती इलाके में स्थित है। पुरा क्षेत्र आदिवासी बहुत है। गुजरे जमाने में यहां घना जंगल था लेकिन देश के अन्य भागों में जंगल के उजड़ने की किया ने इस क्षेत्र को भी नहीं बक्शा परिणाम स्वरूप यहां की धरती भी बगैर जंगल की हो गई। क्षेत्र में मुख्यतः तीन–चार जातियां निवासरत है जिसमें ब्राहमण, राजपूत, बनिये एवं सतत व सब तरह से शोषित दशा में जिंदा रहने वाला आदिवासी समाज है।

जिले में पढ़ाई के लिए सरकारी व्यवस्था का सर्वथा अभाव है। सरकार के कुछ प्रयत्न अवश्य इस दिशा में हुए है लेकिन वे ग्राम्य जीवन के जनमानस के मध्य सामंजस्य बिठाकर चलने वाली शिक्षा प्रदान नहीं कर पाये है। यहां का आदिवासी समाज हमेशा कर्ज में डूबा रहता है। सिंचाई के लिए वर्षा के अलावा अन्य कोई स्त्रोत नहीं है। वर्षा की दर भी प्रतिवर्ष कम होती जा रही है। खेती करते हुए भी खाने के अनाज की कमी का सामना करना पड़ता है। बीज, खाद व घरेलू जरूरतों की आपूर्ति के लिए लोगो का अन्य शहरों में मजदूरी के पलायन तथा बंधुआ मजदूर रहने के लिए विवश है। बाल मजूदरी व्यापक मात्रा में होती है। अन्य आय एवं रोजगार के अवसर यहां की विपरीत भोगोलिक एवं सामाजिक स्थिति के चलते कम है और सरकार द्वारा भी कोई ठोस कदम नहीं उठाये गये है। ऐसे में पढ़ना–लिखना उनके लिए एक समस्या है। समाज की पहले वाली पीढ़ी अंधश्रद्धा, समाज में व्याप्त कुरीतियां एवं कर्ज, सामंतशाही मानसिकता में जीवन यापन कर रहे है। स्वाभाविक है कि दूसरी पीढ़ी पर भी इन कुसंस्कारों की स्पष्ट छाप बनेगी ही।

सम्पर्क रात्रिशालाः चुनौतिया व अपनायी गई रणनीति

सम्पर्क ने अभी तक क्या किया ?

सम्पर्क द्वारा गांवों में ग्राम समितियों का गठन कर लोगों को एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया है। इसके साथ ही संस्था द्वारा संचालित सारे कार्यक्रमों में लोगो की भागीदारी को सुनिश्चित किया है। संस्था के कार्यों में पूर्णतः लोक भागीदारी को देखा जा सकता है। कुछ वर्ष पूर्व सम्पर्क द्वारा गठित ग्राम समितियों ने सम्पर्क से मांग की कि हमारे बालको के लिए पढ़ने का प्रबंध उपयुक्त समय में हो तो अच्छा होगा इसके लिए संस्था ने

1994 से 10 गांवों में रात्रिशालाओं के संचालन का जिम्मा लिया तब सम्पर्क के पास समाज कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र तिलोनिया राजस्थान शिक्षा का अच्छा अनुभव था।

सम्पर्क के सामने कैसे बालक थे ?

तथाकथित शिक्षित एवं आधुनिक समाज के अलावा एकदम अलग सांस्कृतिक विरासत लिए हुए आदिवासी समाज के बालक थे जो दिन में ढोर (मवेशी) चराने के अलावा खेती के कार्यों में परिवार के लोगों की मदद करते थे। समाज का रहन–सहन व संस्कृति अन्य समाज से भिन्न है। अभावों के मध्य जीवन यापन करते बालक मजदूरी एवं खेती के कार्यों में लगे रहने वाले बालक जिनके मां–बाप को शिक्षा क्या है यह तो मालूम है लेकिन जिस तरह से सरकार ने शिक्षा का स्वरूप उनके सामने रखा उसमें बालक व पालक दोनो संतुष्ट नहीं हुए कि हमारे जीवन में इस प्रकार की शिक्षा कैसा बदलाव दे सकती है। संस्था ने सबसे पहले यही सोचा कि इनकी शालाऐं दिन में तो नहीं संचालित की जा सकती है इसलिए रात का समय ही उपयुक्त रहेगा। अब यह बात सामने आई है कि इन शालाओं में शिक्षक कौन होगा और कैसा होगा?

सम्पर्क रात्रिशाला का शिक्षक

शिक्षक चुनने का आधार ग्राम समिति व अन्य लोगों को दिया गया। शिक्षक कुछ पढ़ा–लिखा हो यह आवश्यक माना गया लेकिन कितना पढ़ा–लिखा हो यह तय नहीं किया गया। शिक्षा पांच दर्जे तक पढ़ा भी हो सकता है या उससे उपर भी। गांव में उल्लेखित शिक्षा प्राप्त एक–दो युवक होते है जो औपचारिक शिक्षा पद्धति से तालमेल न बिठा पाने के कारण आगे अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाते है एक–दो वर्ष एक ही कक्षा में पढ़ने के न तो रोजगार के अवसर उनके पास होते है। ऐसे युवको को गांव की रात्रिशाला चलाने के लिए बतौर शिक्षक चुना गया। सम्पर्क ने उनको प्रशिक्षित करने का सोचा।

सम्पर्क ने क्या सोचा एवं क्या किया

जैसे के पूर्व में बताया गया है कि शिक्षक, बालक एवं पालक ये तीनों एवं विशिष्ट समुदाय का प्रतिनिधित्व करते है एवं कामकाजी भी है। इस बात को मदेनजर रखते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम इस तरह तैयार किया गया कि जिसमें बालक के लिए शिक्षा एक बोझ ना बने बल्कि एक रूचिकर अनुभव बने। इस लिए नवाचार युक्त अनौपचारिक शिक्षा पद्धति को अपनाया और शिक्षण का प्रकार भी अभिक्रमित हो इस बात का भी ध्यान रखा गया। सम्पर्क का रूझान इस तरफ था कि बालक जिस समुदाय से है उससे उसका नाता ना टूटे। बालक खेती के कार्यों को भी करे। प्रकृति से जुड़ाव बना रहे ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की जाये। शुरूआत में संस्था ने कुछ उद्देश्य तय किये जो निम्नलिखित है–

- *दैनिक जीवन में कार्यकुशलता बढ़े जैसे खेती सामाजिक व आर्थिक मामलों में,*
- *शोषण के मामलों में आवाज उठाये जैसे–अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़े,*
- *साहुकारों के जाल से मुक्त होने की मानसिकता बने,*
- *राजनीतिक व प्रशासनिक ढांचे को समझे,*
- *बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास हो,*
- *आत्मविश्वास के साथ गलत–सही का निर्णय लेकर गलत का प्रतिकार कर सके,*
- *इन सभी को पूर्ण कर सके इतना ज्ञान, भाषा, विज्ञान व पर्यावरण व उनके परिवेश से जुड़ा गणित।*

शिक्षक प्रशिक्षण

इसमें सबसे पहले भाषा सिखाने की पूर्व तैयारी स्वरूप स्थानीय भीली भाषा के गीत, लोगीत एवं लोकवार्ता का शिक्षण में इस्तेमाल करना सिखाया जाता है। उससे बालक में स्वयं बोलने व बोलकर सुनकार समझ बनाने की क्षमता का विकास होगा यह समझाया गया है। चित्रमय कहानी चित्र घटनाक्रम आदि पर बालको के साथ कैसे चर्चा की जाये उसी से मूलाक्षरों का ज्ञान, शब्दो वाक्यों का ज्ञान कैसे दिया जाये यह सिखाया गया। शब्द बनाना कहानी सोचकर बनाना, शब्द एवं कहानी जोड़कर कविता जोड़कर उसे अभिनय के रूप में कैसे बालको को प्रस्तुत करेंगे। यह बात शिक्षक बालको के सामने रखकर कैसे उन्हें प्रेरित करेंगे यह बात बताई जाती है। अक्षरों की पूर्व तैयारी स्वरूप धुल में अक्षरो के आकार को बनाना, गीली मिट्टी से अक्षर बनाना इससे बालक अक्षरों के मोड़ सीखकर अक्षरों को बनाना व लिखना सीखते है।

गणित सीखने की पूर्व तैयारी स्वरूप वस्तुओ का वर्गीकरण एवं सामुहीकरण के पेटर्न बनाना, ठोस वस्तुओं से गिनती सिखाना, समाज में चलित गणना के तरीको को भी शिक्षण के दौरान प्रयोग किया जाता है। जैसे पांच–पांच वस्तुओं को जोड़कर पचोड से भी गिनना बताया जाता है। अपने पर्यावरण व परिवेश पर चर्चा करते हुए भाषा, गणित ज्ञान, नाप तोल, हाट बाजार की प्रक्रिया, खेती किसानी, नफा नुकसान, ढोर आदि के बारे में बातचीत करते हुए पर्यावरण के बारे में जानना। पेड़–पौधे, देश खाद, देशी कीटनाशक तैयार करना, भूजल स्तर विकास, भू सुधार आदि के बारे में बालको के साथ कैसे चर्चा की जाये यह बताया जाता है।

जानवरों के रोग, उनके देशी व घरेलू उपचार, हमारा शरीर, स्वास्थ्य व साफ–सफाई, सामान्य मानव रोग इलाज में देशी दवाओं का उपयोग, क्षेत्र में पाई जानी वाली जड़ी–बूटियों का संरक्षण व विकास आदि की बाते प्रशिक्षण में होती है। इसके अलावा सम्पर्क इस अनेक बालकेंद्रित कार्यशालाआये व नागरिक शास्त्र के के लिए प्रत्येक शालाओं में बाल पंचायत के चुनाव कराये जाते है। दूसरी ओर शिक्षक एवं बालको को बारी ज्ञान प्राप्त हो इसके लिए बच्चों को बाहर भ्रमण हेतु ले जाया जाता है। सम्पर्क ग्राम परिसर में एक सामुदायिक विज्ञान केन्द्र की भी स्थापना की गई है जिसे विक्रम सारा भाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र अहमदाबाद के बौद्धिक सहयोग से स्थापित किया गया है।

1. ***बाल भ्रमण :*** *बालको को बाहरी परिवेश के बारे में जानकारी से अवगत कराने के लिए वर्ष में एक बार भ्रमण कराया जाता है। रात्रिशाला के बालक जो चरवाहे है तथा गांव छोड़कर कहीं जाते नहीं है उन्हें दूसरे संसार मतलब शहरी जीवन, मोटर गाड़ी, रेल मकान आदि रहन–सहन देखने का मौका मिला है। कार्यशालाओं के दरम्यान भी ऐसे छोटे भ्रमण जैसे कोई सरकारी कार्यालय जाना, वहां जाकर बातचीत करके समझ बनाकर ज्ञान प्राप्त करना जिसमें अभी तक डाकघर, बैंक, पुलिस, स्टेशन, तहसील कार्यालय, अस्पताल आदि की कार्यप्रणाली से अवगत कराया जा चुका है। यह सब देखकर बच्चे अपने गांव में आकर अपने माता–पिता एवं दोस्तों को बहुत ही उत्साहित होकर अपने अनुभवों को सुनाते है। 95 प्रतिशत बच्चो ने पहली बार बस व रेलगाड़ी देखी और उसमें बैठने का आनंद भी पाया है। इस गतिविधि से बालको में आत्म विश्वास बढ़ने के साथ ही सीखने की लालसा, नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।*

2. ***बाल कार्यशाला :*** *सम्पर्क स्वयं सेवी संस्था ने सीधा सम्पर्क स्थापित करने में भी विश्वास रखती है। संस्था का यह मानना है कि बच्चो से सीधे बातचीत के जरिये शाला की स्थिति बच्चों की स्थिति आदि के बारे में जाना जा सकता है। इस हेतु संस्था वर्ष में तीन बार बाल कार्यशालाओं का आयोजन करती है। ये कार्यशाला हर चार महीने के अंतराल से आयोजित की जाती है तदुपरांत कार्यक्रम को बच्चों के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है। प्रत्येक कार्यक्रम में अलग–अलग बच्चों को बुलाकर दैनिक जीवन में आने वाली व्यवहारिक बातों जैसे बैंक, पुलिस थाना, अस्पताल, कोर्ट, डाकघर, तहसील कार्यालय आदि की कार्यप्रणाली के बारे में चर्चा कर प्रत्यक्ष दिखाया जाता है। वक्त वक्त पर गणित एवं विज्ञान विषय में क्षमता एवं कौशल की वृद्धि के लिए कार्यशालाएं की जाती है। उसमें गणित को कैसे रूचिकर बनाया जाए खेल खेल में कैसे सीखाया जाए उस बात को लिया जाता है। विज्ञान में बच्चें प्रयोग करके देखे और स्वयं तथ्य ढूंढने की कोशिश करे उस बात को लिया जाता है। विज्ञान के प्रयोगो में जो परिणाम दे दिये गये है सिर्फ उसको ही ध्यान में न रखकर अलग–अलग पहलूओं से जांच कर प्रयोग किया जाता है। और उसके कैसे और क्यूं पर बातचीत होती है। बाल पंचायत के सरपंचा की कार्यक्षमता वृद्धि के लिए समय समय पर कार्यशालाएं आयेाजित की जाती है। रोजगार लक्ष्यी प्रशिक्षण जैसे ग्रीटिंग कोर्ड बनाना, ड्राइंग शीट के कंडील बनाना, चाक बनाना, मोमबत्ती बनाना, वाशिंग पावडर बनाना, खाद्य प्रसंस्करण के लिए भी कार्यशाला होती है। व्यस्क किशोर किशोरियों के लिए अलग अलग कार्यशालाएं करके उनकी शारीरिक एवं मानसिक समस्याएं एवं चिकित्सीय जरूरत पर बातचीत की जाती है। सरकारी शाला के बालको के साथ विज्ञान की कार्यशालाएं अलग की जाती है जिसका उद्देश्य यह है कि चीला चालु ढरे वाला विज्ञान शिक्षण में सरकारी स्कूल में उनके द्वारा बदलाव लाने की कोशिश।*

3. ***शिक्षक भ्रमण :*** *कहते है कि देखी हुई घटना, वस्तु या जानकारी लंबे समय तक मानस पटल पर अंकित रहती है। शिक्षको को शिक्षण में मदद मिले इसलिए इन्हें विज्ञान भवन, तारघर, मानव संग्रहालय तथा ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कराया गया। इससे प्राप्त अनुभवों को शिक्षक शाला में बांटता है। अहमदाबाद का साबरमती आश्रम जो गांधी जी का स्वराज आंदोलन व अन्य रचनात्मक गतिविधियों*

केन्द्र बिंदु रहा है उसकी मुलाकात कराई गई उससे गांधीजी के जीवन व कवन के बारे पता चला। उन्होंने उसी बात को बच्चों में बांटा। आश्रम के नजदीक सफाई विद्यालय जो सिर्फ हरिजन परिवारों के बच्चों के साथ काम करता है वह भी दिखाया गया ताकि दलित क्या है? उनका क्या काम था? वे हमसे अलग नहीं है आदि बातचीत की गई। शिक्षको को नमक आंदोलन का स्थल दांडी भी दिखाया गया। ताकि उन्हें नमक आंदोलन के बारे में सही पता चल सके। वहां एक छोटा सा गांधी आश्रम है वह भी दिखाया गया है।

4. ***बाल चेतना रैली :*** *अभी तक दो रैली का आयोजन हो चुका है। एक रैली में कारगिल में हुए संघर्ष के बारे में लोगों को बताया गया तथा सैनिको की मदद के लिए पैसा एकत्र कर सैनिक कल्याणार्थ भेजा। बच्चों ने कारगिल संघर्ष को अपने खेत व गांव की सीमा के झगड़े के रूप में देखा और इसी उदाहरण को गांव में जाकर बताया गया। दूसरी रैली बालकों के विभिन्न अधिकारों को लेकर निकाली गई जिसमें बाल मजदूरी, बंधुआ मजदूरी जंगल बचाने के बारे में थी। इससे बालको में सामाजिक एवं अन्य समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।*

5. ***सामुदायिक विज्ञान केन्द्र :*** *संस्था द्वारा 1998 में एक अभिनव पहल को शुरू कर संस्था परिसर में ही एक सामुदायिक विज्ञान केंद्र की स्थापना की गई। इस केन्द्र में विभिन्न प्रकार की विज्ञान और गणित से संबंधित सामग्री का संकलन किया गया है। इनमें विभिन्न प्रकार के जीवों के जार में रखे नमूने, मानवीय अंगों के प्रतिरूप, विद्युत, डीजल व भाप के इंजिन, गोबर गैस संयंत्र का नमूना तथा अन्य समाजोपयोगी उपकरणों का संकलन किया गया। इससे जुड़ी एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसे विक्रम सारा भाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र की मदद से सम्पन्न किया गया जिसमें विज्ञान के यंत्र जैसे पेरिस्कोप, डबल पेरिस्कोप, कलर फिल्टर, ऐमस चेयर तथा अन्य जादुई वस्तुओं का निर्माण किया है। साथ ही गणित की पजल्स को भी कार्यशाला के दौरान बनाया गया है। इससे बालकों में विज्ञान व गणित जैस कठिन माने जाने वाले विषयों के प्रति सकारात्मक रूख प्रदान करने एवं अंधविश्वासों को दूर करने में मदद मिली है।*

6. ***बाल पंचायत :*** *आज के बालक कल नागरिक है इस नई पीढ़ी को आज से ही आत्मविश्वासी, नेतृत्वशील, सचेत तथा संचालन एवं प्रबंधन में बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए बाल पंचायतों का द्विस्तरीय संरचना का गठन किया गया है। जिससे बच्चों में उम्मीदवार से लेकर चुनाव प्रक्रिया, मतदान आदि से भलीभांति अवगत हो सके। इससे बालकों में चुनाव प्रक्रिया व चुने गये प्रत्याशी की बारिकी से जांच करना, अपना हक मांगना, मतदाता के अधिकार व काम आदि के प्रति बालक धीरे–धीरे सजग होते जा रहे है। बाल पंचायत के चुनाव रात्रिशाला के स्तर से प्रारंभ होकर बालपंचायत बालमेला तक होता है। इससे बालको में नेतृत्व विकास, भ्रष्ट आचरण के कारणों को जानना, चुनाव में खराब आचरण ने करना इन सब बातों को सीखने के अवसर उपलब्ध होते है। साथ ही शाला संचालन में बच्चों की भूमिका भी तय की जाती है।*

   इस प्रक्रिया से बच्चे भी स्थानीय समस्याओं के समाधान में मददगार हो रहे है। जैसे शाला शुल्क जमा करना, बच्चो का शाला में लाना, शाला सामग्री के रखरखाव आदि। शाला स्तर बाल सरपंचों के चुनावों का रोचक अनुभव रहा इस प्रक्रिया में बच्चों ने अनेक बारीकियों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया साथ ही कैसे बालक को शाला के सरपंच के लिए कौन–सा बालक उपयुक्त रहेगा आदि के बारे में बच्चों द्वारा ही आम सहमति बनाने का प्रयास किया जाता है। इस प्रक्रिया में रात्रिशाला के बालक सरपंचों से कार्य करने की अपेक्षाएं भी करने लगे है। बाल मेले में चुनी गयी सरपंच कुमारी रूपा को ग्राम पिपलीपाड़ा के रात्रिशाला के बच्चों ने एक पत्र लिखा उसमें यह उल्लेखित किया गया था कि रात की शाला के लिए उपयुक्त जगह न होने के कारण बच्चों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है अतः इस दिशा में अतिशीघ्र कदम उठाने का आग्रह किया था इस पत्र को सरपंच ने अनुमोदित कर संस्था को अग्रेषित किया था। इस प्रकार बालक प्रक्रियाओं से रूबरू हुये है।

7. ***ग्राम शिक्षा समिति :*** *संस्था के शिक्षा कार्यक्रम में गांव के लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रत्येक गांवों में ग्राम शिक्षा समितियों का गठन किया गया है इन समितियों में 3 पुरूष व 2 महिलाओं को पूरे गांव के लोगों को एकत्र कर चुना गया। प्रयास यह किया गया कि इन सदस्यों में वे ही लोग चुने जाये जो शिक्षा संबंधी बातों के जानकार हो। इन समितियों को शाला में आने वाली समस्याओं के निपटारे के साथ शाला की व्यवस्था, शिक्षक के चयन, बच्चों को शाला में भेजने तथा*

अन्य कार्यक्रमों में बच्चों एवं लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करने को अधिकार समिति को दिये गये है।

8. ***बाल मेला :*** *वर्ष में एक बार मेले का आयोजन किया जाता है इस मेले के आयोजन में बाल सरपंचों की भी भूमिका अहम् होती है। इस कार्यक्रम में सभी बच्चें सहयोग स्वरूप दो–दो किग्रा. अनाज (गेहूं, मक्का, चावल आदि) या पांच रूपये लाते है जिसका हिसाब अंत में सरपंच द्वारा बच्चों को बताया जाता है। कभी कभी उनके द्वारा एकत्रित किए गए बीज एवं जड़ी बूटियां भी लाई जाती है। उसमें अलग–अलग स्टॉल लगाये जाते है तथा लगभग 200 बालक–बालिकाएं कार्यक्रम में हिस्सा लेते है। इस कार्यक्रम में गणितीय सृजनात्मक समस्याओं को हल करना, कागज एवं मिट्टी के खिलौने, विज्ञान के जादुई खेल एवं उनके द्वारा अंधविश्वास दूर करने के प्रयास किये जाते है। कठपुतली के कार्यक्रम के द्वारा भी समाज में व्याप्त कुरिवाजों को दूर करने के प्रयास के साथ ही बच्चों में विविध शारीरिक क्षमता विकास के लिए ब्यौरा दौड़, अंधी दौड़, तीरंदाजी, खेलकूद, मेढ़क दौड़, लंबी कूद, उंची कूद, रस्सा खींच आदि होता है। ये सभी गतिविधियां प्रतिस्पर्धा रहित होती है। बच्चों द्वारा सालभर में विज्ञान से संबंधित प्रश्न खतों द्वारा सम्पर्क तक आते रहते उसका उत्तर बालमेले में रेडिया प्रोग्रम की तरह दो कठपुतलियां जिसका नाम क्रमशः पेमा काका एवं थावरी बुआ है, देते है। इससे बालक को खुले वातावरण में हर तरह से अपने आपको अभिव्यक्त करने का मौका मिलता है। अंत में नवनिर्वाचित सरपंच द्वारा सभी बच्चों को पुरस्कार दिया जाता है एवं उसी के द्वारा कार्यक्रम का समापन किया जाता है।*

9. ***औषधि संग्रह कार्यक्रम :*** *बालको को अपने परंपरागत औषधि चिकित्सा पद्धति से जोड़े रखने के उद्देश्य से स्थानीय स्तर पर पाई जाने वाली औषधि वृक्ष जड़ी बुटी आदि की पहचान व उपयोग कराने व करने के लिए वर्ष में एक बार यह कार्यक्रम किया जाता है। इसी के परिणाम स्वरूप बालक जडी बूटी व उसके प्रयोग को अन्य बालकों को बताते है। यहीं पर आंवला, बेहडा, हरड़, सफेद मुसली, नायी, गोखरू, अश्वगंधा और अनेक जुडी बूटी इन गांवों में पाई जाी है। इस कार्य को करने में शिक्षक मदद करता है।*

उपरोक्त सभी बातों को करने से बालको का सर्वागीण विकास को सुनिश्चित कर जीवन जीने की कला सिखाती है। अपनी सांस्कृतिक विरासत जो उसके जीवन के लिए उपयोगी है उससे जुड़ाव बना रहता है तथा बालक को एक संपूर्ण नागरिक बनने में मदद करती है। इसके लिए अध्यापन कार्य भी अभिक्रमित रूप से होता है। शिक्षक एवं बालक पर बोझ नहीं होता है खेल खेल में रूचि से पढ़ाई का कार्य सम्पन्न होता है और समाज को भी को भी शिक्षण प्रकिया में जोड़ा गया है। यह बुनियादी शिक्षण पद्धति बालको को एक–दूसरे के व्यक्तित्व को स्वीकार करने की शिक्षा भी प्रदान करती है।